मूल्य 1 रूपया

कृषक समाचार

भारत कृषक समाज का मासिक मुख पत्र

कृषक समाचार की 32,000 प्रतियां सन् 1960 से हर महीने छापकर सदस्यों को भेजी जाती हैं

वर्ष 65 | दिसम्बर, 2020 | अंक 12 | कुल पृष्ठ 8

किसान हित के लिए ही जन्मे थे डॉ. देशमुख

आजादी की लड़ाई में सबसे महत्त्वपूर्ण योगदान किसानों का रहा जिसे आजादी के बाद अनदेखा कर दिया। अंग्रेजों की हुकूमत में देश का किसान और कामगर दोनों ही पीड़ित रहे। उन्होंने गाँव-गाँव तक आजादी की लड़ाई को सन् 1857 से लेकर 1947 तक निडरता से चलाया। उनका जीवन और हालात अंग्रेजों ने तबाह कर दिए। भारत के विभिन्न भागों में जन्मे क्रांतिकारी नेता और शहीद इन्हीं किसानों में से थे। गाँधी जी ने रास्ता निकाला अहिंसा का, सत्याग्रह का। मगर सुभाष ने युद्ध और खूनी क्रांति की बात कही। देशमुख ने अहिंसा प्रक्रिया को राजनीति में अपनाया। शिक्षा और सिंचाई मंत्री बनते ही उनका ध्यान सबसे पहले किसानों की अशिक्षा और गरीबी पर गया। उन्होंने 1931 में शिवाजी एजुकेशन सोसायटी की स्थापना की।

उनके प्रेरणा स्रोत स्वामी श्रद्धानंद थे। जिनका बलिदान चांदनी चौक के घंटाघर पर हुआ था। महाराष्ट्र में महात्मा फुले और अगरकर जैसे मनीषियों के आदर्शों से उन्होंने बहुत कुछ सीखा। विदेशी शिक्षा और भारतीय चिन्तन और लोकतांत्रिक आदर्शों के मिले-जुले व्यक्ति थे - डॉ. पंजाबराव देशमुख। उनका ध्यान वैदिक चिन्तन, कला और संस्कृति पर भी था। 1950 में उन्होंने शिवाजी लोक विद्यापीठ बनाया। जिसका उद्घाटन तत्कालीन राष्ट्रपति डॉ. राजेन्द्र प्रसाद ने किया था। इस विद्यापीठ में भारत की लोक कलाओं को आगे बढ़ाना और बुनियादी शिक्षा को कृषि और गृह विज्ञान से जोड़कर चलाना था। उन्होंने गृह अर्थशास्त्र प्रशिक्षण केन्द्र स्थापित किया जिसमें लड़के-लड़कियाँ पढ़कर

ग्राम सेवक और सफल ग्राम सेविका बनते थे। ग्राम उद्योग के लिए उन्होंने गांधी उद्योग मन्दिर भी स्थापित किया। यह कहना सच ही होगा कि भारत के ग्राम विकास की रूपरेखा में डॉ. देशमुख का सक्रिय हाथ था।

1955 में भारत सरकार ने श्रीमाली कमेटी की सिफारिश पर 10 ग्राम संस्थान खोले। इनमें से एक डॉ. देशमुख के सहयोग से उनके निवास अमरावती जिले में 1956 में शुरू किया गया। उनका ध्यान किसानों की तकनीकी शिक्षा पर भी था। उन्होंने अकोला में तकनीकी शिक्षा बोर्ड बनवाया और बाद में उन्हीं के नाम पर पंजाबराव कृषि विद्यापीठ ने जन्म लिया जो आज पूर्ण कृषि विश्वविद्यालय है। 1926 से लेकर 1956 तक 30 वर्षों में डॉ. देशमुख समाज और गांवों के बहुमुखी विकास का काम पूरा कर चुके थे।

बेसहारा औरतों के लिए नागपुर में नारी निकेतन और अनाथ बच्चों के लिए श्रद्धानंद अनाथालय और गरीब बच्चों के लिए अमरावती में श्रद्धानंद छात्रावास की स्थापना डॉ. देशमुख साहब ने की। डॉ. देशमुख का जीवन इतिहास समाज के उत्थान और किसानों के कल्याण से जुड़ा हुआ है। सच पूछो तो हम आज उनके 100वें जन्मदिन पर भी उनकी सेवाओं का सही-सही मूल्यांकन नहीं कर सके।

मैं यहाँ उनके प्रकृति प्रेम की चर्चा करूँगा। डॉ. देशमुख को वन और वृक्षों से प्यार तो था ही। वे समझते थे कि भारत का भविष्य हरा भरा तभी रह सकता है जब हम लोग वृक्षों की पूजा ही न करें बल्कि वृक्ष लगाएँ और उनका पोषण भी करें। मुझे याद है उन्होंने 1954 में विश्व वन सम्मेलन का उद्घाटन किया था और उन्होंने विश्व की दृष्टि से वनों को देखा। इस सम्मेलन में उन्हें नॉर्वे के भारतीय संस्थान ने अध्यक्ष चुना और वे यूरोपीय देशों के भ्रमण के दौरान नॉर्वे गए और वहाँ जाकर उन्होंने मछली पालन की नई तकनीकों का भी अध्ययन किया।

उनकी दृष्टि बहुत लम्बी थी। अब तक लोग उन्हें केवल किसानों का ही नेता और शुभचिन्तक मानते रहे हैं। जबकि उनका व्यक्तित्व विश्वजनीन और सार्वजनीन था। उनके चिन्तन में केवल भारत ही नहीं पूरी दुनिया पूरी संस्कृति का व्यापक चिन्तन था जो हमारे मनीषी और ऋषि मुनियों की देन थी। उनके बारे में उनके निधन पर तत्कालीन प्रधानमंत्री श्री लाल बहादुर शास्त्री ने अपने शोक संवेदना पत्र में जो विचार और भावना उनके लिए व्यक्त की वह वास्तव में सच है:-

"मुझे डॉ. पंजाबराव देशमुख के निधन पर गहरा खेद है। वह संसद (लोक सभा) के सबसे पुराने सदस्य थे। वह दस वर्षों तक कृषि मंत्री रहे। वह नि:संदेह किसानों के लिए लड़ने वाले एक ही व्यक्ति थे।

वह सामाजिक जीवन में भी जाने माने नेता थे। उन्होंने कितने ही समाज सेवा के काम किए। उन्होंने शिक्षा के क्षेत्र में तो महत्त्वपूर्ण काम समय रहते किया। अनेकों संस्थाएँ, कॉलेज, स्कूल और छात्रावास खुलवाए।

उनके निधन से हुई क्षति को शायद ही हम पूरा कर सकें। मैं उनकी पत्नी श्रीमती विमलाबाई देशमुख को और परिवार के सभी सदस्यों को हृदय से शोक संवेदना व्यक्त करता हूँ।"

- लाल बहादुर शास्त्री

❐

डॉ. पंजाबराव देशमुख के दो ऐतिहासिक भाषण

भारत कृषक समाज के पहले अधिवेशन में अध्यक्षीय भाषण

भारत कृषक समाज के प्रथम अधिवेशन में 3 अप्रैल 1955 को डॉ. देशमुख ने अधिवेशन की अध्यक्षता करते हुए किसान संगठन की जरूरत पर ऐतिहासिक भाषण दिया। इस अधिवेशन का उद्घाटन प्रधानमंत्री पं. जवाहर लाल नेहरू ने किया था। इससे पूर्व जुलाई 1954 में जम्मू कश्मीर में राज्यों के कृषि, पशुपालन, सहकारिता मंत्रियों के सम्मेलन में यह प्रस्ताव सर्वसम्मति से पारित हो चुका था कि देश में राष्ट्रीय स्तर का एक किसान संगठन बनाया जाए। यह सुझाव कृषि और सहकारिता मंत्री डॉ. देशमुख ने इस बैठक की अध्यक्षता करते हुए दिया था। इसी के फलस्वरूप 3 अप्रैल 1955 को समाज के पहले सम्मेलन में भारत कृषक समाज की स्थापना हो गई। डॉ. देशमुख के भाषण के महत्त्वपूर्ण अंश इस लेख में प्रस्तुत हैं :

मुझे खुशी है कि देशभर से आए किसान आज यहाँ इकट्ठे हुए हैं। देश के नेता प्रधानमंत्री जवाहर लाल नेहरू का आशीर्वाद तो उन्हें मिलेगा ही साथ-साथ वह उन्हें सुन भी सकेंगे। इन्हीं दिनों भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान की जयंती दिल्ली में मनाई जा रही है। मैंने सोचा अधिवेशन में आए किसान प्रतिनिधि उसको भी देख सकेंगे। देश का कृषि सबसे बड़ा उद्योग है। उसमें सुधार लाना आसान नहीं है। दस में से सात आदमी खेती से रोटी कमाते हैं। इसी खेती से राष्ट्र को आधी आमदनी होती है। हमारी खेती असंगठित है और मौसम के भरोसे है। खेती कमाऊ धंधा न रहकर देश की जीवन पद्धति मात्र है।

देश का किसान परिवार कर्जे में डूबा हुआ है। अब और हम खेती और किसान की उपेक्षा नहीं कर सकते। पिछले सालों में कृषि उत्पादन बढ़ाने के लिए सरकार ने कुछ किया है। पैदावार बढ़ी हुई है। कुछ नियंत्रण हटने और अनाज की कीमतें ठीक मिलने से थोड़े से हालात सुधरे हैं। फिर भी कुछ क्षेत्रों में खेती में ज्यादा लागत लगी है और कीमतें भी गिरी हैं और किसान को फायदा नहीं मिला है। खेती में पूँजी का कम लगना और कीमतों का बढ़ना एक ऐसी समस्या है जिसे किसान हल नहीं कर पाता।

सरकार हालातों से वावस्ता है। वह एक ऐसी कीमत तय करती है जिससे खाने वाले खरीदार को परेशानी न हो और गिरी कीमतों में किसान भी भूख न मरे। फिर भी मैं कहूँगा अकेली सरकार कुछ नहीं कर सकती। किसानों का सहयोग जरूरी है। सरकार और किसान एक-दूसरे को समझें और मिलकर काम करें। इसीलिए यह समाज बनाया गया है। अखिल भारतीय देहात ऋण सर्वे समिति की सिफारिशें आई हैं और उसमें कहा है कि हर किसान को खेती में लगाने के लिए ठीक कर्जा मिलना चाहिए। यह बात भी चल रही है कि सरकारी क्षेत्र में कृषि विपणन संस्थाओं को मजबूत किया जाए। इससे उपज का जो पैसा उपभोक्ता देता है उसका ज्यादा हिस्सा किसानों को मिलेगा। इस रपट में सहकारी क्रय विक्रय पर पूरा जोर दिया गया है। बिचौलियों को कम करना जरूरी है। यह लोग पैदा करने वाले और खाने वाले की जेब से काफी पैसा खींच ले जाते हैं।

दूसरा पहलू है कि खेती की लागत को कैसे कम किया जाए। एक तरीका है छोटी-छोटी जोतों को इकट्ठा किया जाए। इससे खेती में लागत की बचत होगी। किन्तु विश्व भर में इस बात को अभी मान्यता नहीं मिली है। यह तो सभी मानते हैं कि छोटे-छोटे खेत किसान को ज्यादा लाभ नहीं पहुँचा सकते। किसान को

अपनी जमीन से बहुत प्यार है। वह अपनी जमीन दूसरे की व्यवस्था में देने से डरता है। एक रास्ता सहकारी खेती बनता है। जिसमें ज्यादा पैदावार प्रति इकाई ली जा सकती है और लागत को बचाया जा सकता है। आप जानते हैं कि दुनिया के देशों में भारत में प्रति एकड़ पैदावार सबसे कम है। उर्वरकों का उपयोग बहुत कम हो रहा है। पुराने तरीके से खेती की जा रही है। नए तरीकों से करने से पैदावार जरूर बढ़ेगी। जैसा कि धान की खेती में जापानी तरीके अपनाने से किसानों को फायदा हुआ है।

अब तक नई खेती में चौबीस प्रतिशत धान की पैदावार बढ़ी जो जापान की औसत पैदावार से एक तिहाई है। ईश्वर जाने हमारे किसान सौ फीसदी पैदावार कब बढ़ाएँगे। लगातार अनुभव और अनुसंधान चल रहे हैं। किसान के पास कितने पहुँचते हैं यह मैं नहीं कहता। अगर किसान को बताया जाए तो किसान उन्हें अमल में लाएगा। खेती की लागत बचाने का एक तरीका यह भी है कि आदानों की खरीद सहकारी संगठन द्वारा की जाए। इससे किसान जो खुदरा आदान खरीदता है उसके मुकाबले बचत होगी। आप चाहेंगे कि सहकारी क्षेत्र से बड़े पैमाने पर खाद बीज खरीदे जाएँ और सस्ती ब्याज दर पर किसानों को दिए जाएँ। किसान के पास कटाई के बाद बहुत समय बचता है। वह इस समय का सदुपयोग करे। सहकारी आधार पर गाँव-गाँव में कृषि उद्योग लगाए जाएँ। यह उद्योग भी उस समय ज्यादा काम करें जब खेती की क्रियाएँ नहीं होतीं। ग्राम उद्योग का विकेन्द्रीकरण करने से गाँव और किसान दोनों को फायदा मिलेगा।

कृषि की समस्या देश की बड़ी आर्थिक समस्या है। इससे भूमि की नीति भी जुड़ी हुई है। सरकार चाहती तो है कि कृषि उद्योग और कृषि को बढ़ाया जाए मगर कृषि नीतियों के सही लागू न होने से किसान का भाग्य नहीं बदल सका है। इस बारे में सरकार को भी समय-समय पर किसानों से सलाह करना जरूरी है। यह सलाह भारत कृषक समाज जैसा संगठन दे सकता है। इसका मकसद और क्षेत्र व्यापक है। यह संगठन दोतरफा काम करेगा किसानों के दरवाजे तक अनुसंधान को पहुँचाना। उन्हें सरकार और अन्य विभागों से सूचनाएँ इकट्ठी करके देना। दूसरी ओर किसानों के सामने जो कठिनाइयाँ आती हैं उन्हें इकट्ठा करके सुझाव के तौर पर सरकार तक पहुँचाना।

खेती में कितना फालतू या ज्यादा उत्पादन होता है। उस समस्या का अध्ययन करना और पहले से अन्दाज लगाकर कौन सी फसलें बोई जाएँ इसका जायजा लेना और ज्यादा उत्पादन को जरूरत की जगह बेचना। इन सभी बातों को देखते हुए भी कृषक समाज की जरूरत है। यह समाज पेशेवर तरीके से काम करेगा। इसमें कोई राजनैतिक दखलंदाजी नहीं होगी। यह संगठन गैर वर्गवादी होगा और धर्म और जाति पर आधारित नहीं होगा। इसमें हर स्तर के छोटे-बड़े किसान अपनी भलाई के लिए एकजुट होंगे। इसकी बैठकों में सरकार, व्यापारी, बाजार विशेषज्ञ, जन प्रतिनिधि और विस्तार सेवी, औरत और आदमी सभी किसान के साथ बैठकर सलाह मशवरा करेंगे। तभी मिलकर देश की अर्थव्यवस्था के बारे में सही काम होगा।

किसान अपनी जमीन से ज्यादा पैदावार ले - यह सभी का चिन्तन होगा। यह संगठन किसी राजनैतिक विचारधारा और नारेबाजी से दूर हटकर केवल किसानों की बात करेगा। यह समाज सरकारी हस्तक्षेप से भी अलग होगा और उन सभी का स्वागत करेगा जो किसान की बात करते हैं। जो लोग दूर-दूर किसानों की बातें करते हैं और उनकी रक्षा नहीं कर सकते उनसे हटकर समाज द्वारा सामूहिक रूप से कारगर तरीके से किसान की समस्याओं

को सुलझाने की बात होगी।

आप सभी लोग जानते हैं कि गुलामी के दिनों में किसान कितना पिछड़ा है। सताया गया है और उसका खून चूसा गया है। उसके दिमाग से उन दिनों की गुलामी निकालनी है। उनमें नई चेतना डालनी है। नई दुनिया को दिखाकर किसान को नई खिड़की दरवाजे अपने दिमागों के खोलने हैं। ताकि उनमें आत्मविश्वास पैदा हो। यह काम भारत कृषक समाज से अच्छा कोई नहीं कर सकता।

आम धारणा बन गई है कि खेती में कुछ भी सीखने को नहीं, कोई भी खेती कर सकता है। इसे बदलना होगा। खेती भी दूसरे धंधों की तरह कठिन है। उसमें समझ-बूझ और नई सूझबूझ की जरूरत है। किसान को निरन्तर सीखना है और उसके पास अनुसंधान और प्रयोगशालाओं की ज्ञान गंगा उसके खेत तक सूचनाओं से भरी हुई लगातार बहनी चाहिए। समाज यह भी करेगा। अब जमींदार और सामंत तो हट गए। किसान की जमीनें बच गईं। वह आजाद हो गया। उसे अपनी बात कहने की छूट मिली। पहले उसकी तरफ से जमींदार प्रवक्ता होता था। सरकार बोलती थी। मगर आजादी के बाद किसान इस समाज के मंच से अपनी बात खुद कहेगा।

आजकल सामुदायिक विकास और राष्ट्रीय विस्तार सेवा किसानों को सलाह देने का काम और गांव के विकास का काम कर रही है। समाज भी इन्हें हटाना नहीं चाहेगा बल्कि इनके काम में सहयोग देगा। देश में उपरोक्त सेवाओं का पूरा विस्तार नहीं है। यह कहीं-कहीं नमूने के तौर पर चल भी रही हैं। जबकि समाज पूरे देश में लोकतांत्रिक ढंग से देहातों और किसानों के लिए इस तरह का सेवाओं का तंत्र तैयार करेगा और उसे फैलाएगा। तभी समस्याएँ हल होंगी।

कृषक समाज को ऊपर से थोपा नहीं जा रहा है। यह समाज वो खुद बना रहे हैं। उन्हीं का संगठन है और उन्हीं को चलाना है और इसके लाभ भी उन्हीं को मिलेंगे। भारत कृषक समाज बनाने का विचार नया नहीं है। बड़े-बड़े देशों में किसान के ताकतवर संगठन चल रहे हैं। जहाँ उद्योग धंधे ज्यादा हैं, वहाँ भी बराबर की टक्कर में किसान संगठन खड़े हैं। ब्रिटेन को ही देखें जो पूरी तरह उद्योगी देश है। मगर वहाँ भी नेशनल फार्मस यूनियन और नेशनल फार्मस यूनियन ऑफ स्कॉटलैंड ताकतवर संगठन हैं। इन्हें किसान चलाते हैं, वे किसान जो पैदावार करते हैं और पैदावार के मामले में यह संगठन किसानों के हितों की रक्षा कभी-कभी राजनैतिक गठजोड़ और आंदोलन के माध्यम से भी कर लेते हैं।

अमरीका में अमेरिकन फार्म ब्यूरो फैडरेशन और ग्रैंज बड़े संगठन हैं जो किसान के आर्थिक, सामाजिक और शैक्षिक हितों को भी देखते हैं और देशों में भी ऐसा हो रहा है। कनाडा में फार्म फोरम संगठन है जिसको सरकार आधा खर्चा भी अपने बजट से देती है। यह एक अच्छा अवसर है कि कांग्रेस ने अबाडी सैशन में जो समाजवादी समाज बनाने की घोषणा की थी। उसका सही पालन किसानों के द्वारा ही हो सकता है। क्योंकि देश में जमीन से पैसा निकालने का काम किसान ही करता है। जिसका बंटवारा सही तरीके से समाजवादी ढंग से समाज में नहीं हो पाता। किसान की जिम्मेदारी है कि वह खेतों से धन सम्पदा बढ़ाए और अपना जीवन-स्तर ऊँचा करे। तभी सारे देश के लोगों को दर्जा सुधरेगा और पूँजी का संग्रह नहीं होगा।

यह संगठन अचानक नहीं बना है। बहुत लम्बे अर्से से इस पर चिन्तन और परामर्श चलते रहे हैं। सभी तरह के तबकों से पूछा गया है, सलाह ली गई है। मैं जब कृषि मंत्री बना तो मैंने देश भर के किसानों से बार-बार बातचीत की। मेरे से पहले खाद्य मंत्री श्री कन्हैयालाल माणिक लाल मुंशी ने भी एक किसान सम्मेलन

करके किसानों का संगठन बनाने की बात की थी। इसके बाद राज्यों के कृषि मंत्रियों के श्रीनगर के सम्मेलन में यह संगठन बनाने की जिम्मेदारी मेरे कंधे पर डाल दी गई है। मुझे हर्ष है कि मैं यह जिम्मेदारी आप लोगों की मदद से पूरी कर सकूंगा।

खेती में नर-नारी और नौजवान भी लगे हुए हैं। इस नजरिए से हमें खेती में लगे किसानों को तीन हिस्सों में बांटना होगा। पुरुष, महिलाएं और युवा किसान। भविष्य में हमें ग्राम महिला संगठन भी बनाना है और युवा कृषक समाज की भी जरूरत होगी। ग्राम महिला संगठन में केवल बड़ी उम्र की महिलाएं होंगी और युवक कृषक समाज में किसानों के लड़के-लड़कियां साथ-साथ काम करेंगे। चौथी कल्पना छात्र किसनों की भी है। किसानों के लड़के-लड़कियां जो खेती नहीं करते, पढ़ाई करते हैं वह भी देश में छात्र किसानों का संगठन बनाएंगे तो अच्छा होगा। इन संगठनों की शृंखला देश के 26 राज्यों में बढ़ेगी और राज्यों की शाखाएं इन संगठनों को जिला, तहसील, तालुका और गांव तक एक दिन पहुंचाएंगे ऐसा मेरा विश्वास है। हर क्षेत्र से प्रतिनिधि इकट्ठे करके राष्ट्रीय स्तर पर एक अखिल भारतीय कृषक परिषद भी हमें बनानी होगी। इस तरह भारत कृषक समाज सभी का सहयोग और भागीदारी बढ़ाकर आगे बढ़ता रहेगा।

इस सम्मेलन में 26 राज्यों से आए हुए किसानों में कुछ काफी पढ़े-लिखे और प्रगतिशील किसान भी हैं जो दूसरे पिछड़े किसानों को नई खेती का रास्ता दिखाएंगे और उनकी मदद करेंगे। आप सबने एक होकर समाज की स्थापना के प्रस्ताव का अनुमोदन किया है। उसके लिए आप सभी को धन्यवाद देता हूँ। मेरा भाषण बहुत लंबा हो गया। आप लोग बड़े धीरज से सुन रहे हैं। अब मैं पं. नेहरू द्वारा भारत कृषक समाज के प्रथम सम्मेलन की जो शुरुआत हुई है और पं. जी ने अपने आशीर्वाद के साथ इस सत्र का उद्घाटन किया है। उन्हें मैं बहुत-बहुत धन्यवाद देता हूँ। और अपना भाषण समाप्त करता हूँ। जय हिन्द! जय किसान!

❐

0-0-0-0-0-0-0-0-0-0-0-0-0

विश्व कृषि प्रदर्शनी के उद्घाटन के अवसर पर डॉ. देशमुख का स्वागत भाषण

भारत के प्रथम राष्ट्रपति डॉ. राजेन्द्र प्रसाद ने 11 दिसम्बर 1956 को नई दिल्ली में विश्व कृषि प्रदर्शनी का उद्घाटन किया था। उद्घाटन से पूर्व प्रदर्शनी के अध्यक्ष, कृषि मंत्री और भारत कृपक समाज के प्रथम अध्यक्ष डॉ. देशमुख ने अपने स्वागत भाषण में कहा था:-

भारत कृषक समाज किसानों का नया संगठन है। इसके प्रथम राष्ट्रीय सम्मेलन का उद्घाटन 3 अप्रैल 1955 को प्रधानमंत्री पं. जवाहर लाल नेहरू ने किया था। एक वर्ष की आयु के इस संगठन ने जल्दी तरक्की की और राष्ट्रपति राजेन्द्र बाबू ने 2 अप्रैल 1958 को दूसरे राष्ट्रीय किसान सम्मेलन का उद्घाटन भी किया। किसानों तक नई तकनीक को पहुंचाने के लिए 31 मार्च 1956 को एक कृषि प्रदर्शनी भी लगाई गई जिसका खाद्य मंत्री श्री अजीत प्रसाद जैन ने उद्घाटन किया। उस समय (डॉ. देशमुख) ने अपने उद्गार प्रकट करते हुए कहा था:- किसानों को सरलता से तकनीक समझने के लिए नुमाइशों का

लगाना बहुत जरूरी है। साथ में सम्मेलन में वह अपने विचार भी वैज्ञानिकों से विनिमय कर लेते हैं। "उस समय मैंने भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद को उपाध्यक्ष के नाते सुझाव दिया था कि वह दूसरी पंचवर्षीय योजना में प्रदर्शन, सलाहकार सेवा किसानों के लिए शुरू करें। मैंने यह भी कहा था कि अगर सरकार भारत कृषक समाज को यह काम सौंपे तो हम अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर भी विशाल कृषि प्रदर्शनी का आयोजन कर सकते हैं। हम संसार के देशों को दिखा सकते हैं कि भारत की कृषि पिछले कुछ सालों में कितनी तेजी से आगे बढ़ी है और खाद्य के मोर्चे पर हमने विश्व भर में भूख से लड़ाई जीत ली है।

खाद्य मंत्री महोदय ने मेरे इस सुझाव पर अमल किया और 1957 के अंत तक मुझे भरोसा दिया गया कि जल्दी ही विश्व स्तर पर दिल्ली में किसानों के लिए कृषि प्रदर्शनी लगाई जाए। आज यहाँ इस विशाल मैदान में जिस प्रदर्शनी का उद्घाटन राष्ट्रपति महोदय कर रहे हैं - यह हमारे और कृषक समाज के उन्हीं प्रयासों का फल है। मुझे याद आ रहा है कि जब प्रदर्शनी की व्यवस्था के लिए भारत सरकार के मंत्रालयों की बैठक बुलाई गई तो यह तय किया गया कि यह काम किसानों की राष्ट्रीय संस्था - भारत कृषक समाज को ही सौंपा जाना चाहिए। मैं मानता हूँ कि कृषि और खाद्य मंत्रालय सहित सभी ने हमें इसमें पूरा सरकारी और गैरसरकारी ढंग से सहयोग दिया है।

अमरीका के राष्ट्रपति माननीय आइजन होवर महोदय, भारत के राष्ट्रपति जी और हमारे प्रधानमंत्री जी, यहाँ मैं आप सबका स्वागत करता हूँ। यह एक अविस्मरणीय क्षण है। हमारी कोशिशें कामयाब हुई हैं। सभी राज्य और कृषि के राष्ट्रीय संगठनों ने हमें पूरा सहयोग दिया है। मंत्रीगण, मंत्रालय और अधिकारियों का मैं आभारी हूँ कि उन्होंने इस बड़े काम में डट कर सहयोग दिया। अमरीकी सरकार, जिसके राष्ट्रपति महोदय यहाँ मौजूद हैं, ने यहाँ अपना विशाल मंडल लगाया जो कि अमेरिका ने पहले कभी किसी भी देश में नहीं लगाया। मैं सोवियत रूस की तारीफ किए बिना न रहूंगा कि उन्होंने भी अपना विशाल मंडल यहाँ लगाया। और भी देशों ने हमारी प्रार्थना पर अपने अपने देशों की तकनीक के विशाल मंडल लगाकर हमें उत्साहित किया और विश्व के इतिहास में यह पहली विश्व कृषि प्रदर्शनी लगी।

इस प्रदर्शनी से हमें चतुर्मुखी उद्देश्यों को पूरा करने का रास्ता मिला। पहली बात, यह मेला हमारी आंखों के लिए एक दावत है। दूसरे यह मेला दर्शकों को मनोरंजन और आनन्द दे रहा है। तीसरे देखने वालों को नवीनतम ज्ञान और जानकारी मिल रही है। चौथी बात कि सारे विश्व के देश यहाँ इकट्ठे होकर एकता, भाईचारा और किसानों की दुनिया की आपसी समझबूझ पैदा कर रहे हैं। साथ-साथ विश्व के कई देशों से आए विशेषज्ञ यहाँ होने वाली दर्जनों सेमीनारों में खेती के विभिन्न विषयों पर जानकारी दे रहे हैं। अपने उद्देश्य को पूरा करने के लिए हमने अनेक देशों के किसान और सहकारी शिष्टमंडलों को यह प्रदर्शनी

बहुत दुखी हृदय के साथ, हम आप सभी को सूचना देते हैं कि हमारे प्रिय श्री देवेन्दर सिंह चौहान जो कि दिल्ली हेड ऑफिस, भारत कृषक समाज में कार्यरत थे, उनका 13 नवम्बर 2020 को देहांत बीमारी के चलते हो गया है। उन्होंने 10 वर्षों से अधिक का कार्यकाल भारत कृषक समाज को समर्पित किया था। हम उन्हें अपने परिवार के रूप में सदैव याद करेंगे। शत नमन ।

RNI No. 831/1957
पोस्टल रजि० DL (S)-01/3092/2018-20
पहले भुगतान किये बिना पोस्ट करने का लाइसेंस नं० U(C)-92/2018-20
प्रकाशन की तिथि : 1 दिसम्बर, 2020
नई दिल्ली पी.एस.ओ, नई दिल्ली–1,
तारीख 4 एवं 5, दिसम्बर 2020

देखने के लिए यहाँ बुलाया है। भारत कृषक समाज ने अन्तर्राष्ट्रीय कृषि उत्पादक महासंघ का सम्मेलन भी इस अवसर पर आयोजित किया है। इसका समापन 5-12-1959 को हो गया है। सभी के सहयोग से यह महान काम पूरा हुआ है।

कृषि के इतिहास में यह बहुत बड़ी घटना है जो सदियों तक याद रहेगी। जब देश में उद्योगों का विस्तार होगा तो साथ-साथ खेती की यह नुमाइश भी अपना महत्त्व बनाए रखेगी। अभी तक संसार में व्यापार और उद्योग मेले लगते रहे हैं। फिर यह विश्व कृषि मेला लगना भी उतना ही महत्त्वपूर्ण है। क्योंकि हमें दुनिया को भूख से छुटकारा दिलाना है।

आज का दिन इतिहास में एक संकल्प लेने का दिन है। हम आज प्रतिज्ञा करें कि सारे संसार के लोगों को भरपेट खिलाने के लिए ज्यादा से ज्यादा अन्न उगाएंगे। विश्व की सभी सरकारों से कहूंगा कि वह इस काम में संसार के मेहनती किसानों की पूरी मदद करना अपना कर्त्तव्य समझे। कहना होगा कि आज से संसार में भूख से मुक्ति अभियान शुरू हो रहा है। इसमें हमें राष्ट्रपति जी, प्रधानमंत्री महोदय और महामहिम आइजनहोवर, राष्ट्रपति अमेरिका का भी वरदहस्त मिलेगा। कुछ महीने पहले रोम (इटली) में हुई विश्व कृषि एवं खाद्य संगठन की सभा में यही निर्णय लिया गया था।

मैं महानिदेशक एफ.ए.ओ. से कहूंगा कि वे भूख से मुक्ति अभियान का एक सहायता कोष स्थापित करें। इसमें संयुक्त राष्ट्र के सदस्य और अन्य संस्थाएं खुलकर पैसा दें। इस अभियान में चार बातें होंगी। पहली, सूचना और शिक्षा, दूसरी, अनुसंधान, तीसरी, राष्ट्रीय एक्शन प्रोग्राम और चौथी, सभी कामों में एफ. ए.ओ. का मार्गदर्शन और तकनीकी सहायता।

भारत कृषक समाज भूख से मुक्ति अभियान का अलग न्यास बनाकर धन राशि एकत्र करेगा। इससे भारत के किसानों को अनुसंधान, सूचना और शिक्षा मिलती रहेगी। इस प्रदर्शनी से बचा रुपया भी इसी काम में लगाया जाएगा। भारत कृषक समाज सरकार, धार्मिक तथा अन्य संस्थाओं और धनी व्यक्तियों से दान लेगा। यह घोषणा करते हुए मुझे खुशी हो रही है।

मैं अपने भाषण के अन्त में दो बातें और बता रहा हूँ। पहली बात सहकारी आधार पर दो देशों को मिलकर व्यापार का विकास करना है। जो सदियों से चले आ रहे विश्व व्यापार की ही परिकल्पना है। इस काम के लिए मैं एक और संस्था राष्ट्रीय कृषि सहकारी विपणन संघ लि. (नेफेड) की स्थापना 2 अक्टूबर 1958 को कर चुका हूँ। यह पवित्र दिन महात्मा गांधी का जन्म दिन है। यह संस्था अन्तर्राष्ट्रीय व्यापारिक सौदे सहकारी संस्थाओं के माध्यम से करेगी।

हम जल्दी ही राष्ट्रीय सहकारी किसान बैंक की भी स्थापना करने जा रहे हैं। जो आगे चलकर अन्तर्राष्ट्रीय किसान सहकारी बैंक बन जाएगी। मुझे आशा है कि आज के इस पवित्र क्षण में लिए गए हमारे संकल्प पूरे होंगे। सभी को धन्यवाद, जय हिन्द!

❐

भारत कृषक समाज ए–1, निजामुद्दीन वेस्ट, नई दिल्ली– 110013, फोनः 011–24359509, 9667673186, ई–मेलः ho@bks.org.in, वैबसाईटः www.farmersforum.in के लिए श्री उरविन्द्र सिंह भाटिया द्वारा सम्पादित, मुद्रित व प्रकाशित तथा एवरेस्ट प्रेस, ई 49/8 ओखला इण्डस्ट्रीयल एरिया, फेस –2, नई दिल्ली –110020 द्वारा मुद्रित।